बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 156 /2026) **Year: 8th**

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 20.06.2026

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ अधिक तापमान के मद्दे नजर चौलाई, भिंडी, लोबिया, कुल्फा, बैगन, टमाटर, मिर्च तथा कद्दू वर्गीय फसलों में आवश्यक मृदा नमी बनाए रखें। इसके लिए काली पॉलीथिन अथवा सुखी घास की पलवार प्रयोग कर सकते हैं। ➢ आवश्यक मृदा नमी के अभाव एवं अधिक तापमान के कारण मिर्च, बैगन, टमाटर तथा कद्दू वर्गीय सब्जियों में पुष्प व फल-पतन हो सकता है। ➢ फसलों को थ्रिप्स तथा सफेद मक्खी जैसे चूसक कीड़ों के प्रकोप से सुरक्षित रखने के लिए उपयुक्त कीटनाशी का प्रयोग करें । ➢ वर्षा ऋतु में सब्जियों की खेती के लिए समुचित जल निकासी वाले खेतों को चुने तथा खेत की गहरी जुताई कर दें जिससे कीट व्याधि व खर पतवार के बीज नष्ट हो जाएं। खेत में कंपोस्ट प्रयोग करके जुताई करें तथा मिट्टी में मिला दें। ➢ वर्षा ऋतु में रोपाई हेतु टमाटर, बैगन, मिर्च तथा खरीफ प्याज की पौधशाला तैयार कर लें। बुआई से पहले प्रति किलो बीज में २.० ग्राम कार्बेंडाजिम अथवा कैप्टन मिलाकर बीजोपचार करें तथा सिंचाई के जल में प्रति लीटर २.० ग्राम कार्बेंडाजिम घोलकर ड्रेचिंग/ सिंचाई करें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	***शस्य-प्रबंधन*** ➢ सही समय पर उपयुक्त बिधि से बुवाई, उपपलब्ध भूमि एवं जलवायु तथा संसाधनों के अनुसार फसलों एवं उनकी प्रमाणित किस्मों का चयन, मृदा परीक्षण के आधार पर उचित समय पर पोषक तत्वों का इस्तेमाल, फसल की क्रांतिक अवस्थाओं पर सिंचाई, आवश्यकतानुसार जलनिकास, पौध संरक्षण के आवश्यक उपाय के अलावा समय पर कटाई, गहाई और उपज का सुरक्षित भण्डारण तथा विपणन बेहद जरूरी है। ➢ जून माह का अंतिम पखवाड़ा किसान भाइयों एवं आम जनजीवन में नई आशा और उमंग लेकर आता है क्योंकि आसमान में बादल छा जाने से ग्रीष्म की तपन कम होने लगती है! ➢ खरीफ फसलों के लिए खेत की तैयारी, भूमि के प्रकार और आवश्यकता के अनुरूप फसलों और उनकी उन्नत किस्म के बीजों का चयन करते हुए सही समय पर बुआई के लिए किसान भाइयों को चौकन्ना होकर योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना होगा तभी उन्हें उनके कठिन परिश्रम और लागत का उचित प्रतिफल प्राप्त हो सकेगा। ➢ मोटे अनाज जैसे बाजरा की मानसून सत्र की पहली अच्छी वर्षा पर बुवाई शुरू कर दें।

		➢ बीज की मात्रा 4–5 किग्रा बीज प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। फसल की बुवाई कतारों करें तथा बीज बोने की गहराई 4 सेमी रखना चाहिए । ➢ इस फसल की बुवाई माह के अन्तिम सप्ताह से शुरू करें तथा जुलाई के प्रथम सप्ताह तक पूरी कर लें। बोआई हमेशा कतारों में कुंड एवं मेड विधि से करना लाभदायक होता है। अच्छे जलनिकास वाली हलकी दोमट भूमि इस फसल के लिए उपयुक्त होता है। ➢ माह के अन्तिम सप्ताह में पर्याप्त नमीं की दशा में अरहर की बुवाई करें । प्रति हैक्टेयर 18–20 किग्राण् बीज पर्याप्त होता है। बुवाई कतारों में 45–60 सेमी की दूरी पर करें। पौधों के मध्य 15–20 सेमी् का फासला रखें। मूंगए उड़द की बुवाई इस माह संपन्न करें। इन फसलों की बुआई हेतु प्रति हैक्टेयर 18.20 किग्राण् बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई कतारों में 30 सेमी् की दूरी पर करें। बुवाई के समय 20–25 किग्रा नत्रजन, 40–50 किग्रा फास्फोरस तथा 15...20 किग्रा0 पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से कतारों में दे । जलनिकास का उचित प्रबंधन अवश्य करें। ➢ धान की सीधी बोआई– जिन किसान भाइओं के पास सिचाईं के साधन खेत समतल व सीडड्रिल की व्यवस्था है वह किसान भाई सीधी बोआई कर सकते है। ➢ किसान भाई धान की सीधी बोआई जून के महीने में कर सकते हैं। इससे किसानों को नर्सरी लगाने व रोपाई में मजदूर के प्रयोग करने में लगात की कमी होगी। ➢ धान की बुआई खेत में पलेवा करके भी कर सकते है अथवा सूखी विधि में भी बुआई करके सिचाईं कर सकते है। प्रमाणित बीज को किसी विश्वसनीय संस्थान से खरीदें व उपचारित कर लें। ➢ बोआई में उवर्रक 120:60:40 (एन.पी.के.) किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। इसके लिये 66 किलोग्राम एम.ओ.पी. को बुआई से पहले खेत में बिखेर कर जताई करें। संकर धान का बीज 15 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर व सामान्य बासमती का धान का बीज 25–30 किलोग्राम/हेक्टेयर की दर से सीडड्रिल के माध्यम से बुआई करें। सीड ड्रिल में 130 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से डी.ए.पी. को सीडड्रिल से दें। ➢ बुआई से पहले सीडड्रिल को कैलिब्रेट कर लें। धान की बुआई 2–3 सेमी0 की गहराई पर करें। ➢ बुआई के बाद अंकुरणपूर्व खरपतवारनाशी पेन्डीमिथाइलीन 3.0 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से स्प्रे करें अथवा 2.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से प्रेटिलाक्लोर (सोफिट) का स्प्रे करें। ➢ वर्षा ऋतु के प्रारम्भ हो जाने पर धान की पौध लगाने का सही समय 15 जून से 30 जून तक है। विलम्ब करने पर रबी की फसलों की बुआई में देरी होगी। ➢ उत्तम उपज वाली किस्म का चुनाव करें व इसे प्रमाणित संस्थाओं से ही खरीदें। बीज को बुआई से एक दिन पहले फफूंदीनाशक व कीटनाशक से उपचारित कर लें। ➢ नर्सरी का क्षेत्र सिंचाई के पास वाला चुनाव करें। ➢ 300 से 400 वर्गमीटर का क्षेत्र एक एकड़ में धान की रोपाई के लिये उचित होता है। इसे जुताई करके तैयार कर लें। इसमें 2 कुन्टल गोबर की खाद बुआई से 20–25 दिन पहले डालें व जुताई कर अच्छे से खेत में मिला दें।

		➢ 20–40 ग्राम/वर्ग मीटर (10–16 किलो0/300–400 वर्ग मीटर) के हिसाब से बीज की मात्रा का प्रयोग करें। ➢ अंकुरित बीज को नर्सरी क्षेत्र में बिखेर दें तथा पक्षिओं से बचाव करें। ➢ हल्की सिचाईं लगायें तथा नर्सरी क्षेत्र में नमी बनाये रखे। ➢ आवश्यकतानुसार खरपतवारनाशी व कीटनाशक का प्रयोग करें। ➢ रोपाई से पहले अगर नर्सरी में हल्के पीले (कागज की तरह सफेद लक्षण) आयें तो 0.5 प्रतिशत फेरस सल्फेट का उपयोग करें। ➢ 20–25 दिन पुरानी या 14 सेमी0 लम्बी पौध का प्रयोग रोपाई के लिये करें। ***मृदा-प्रबंधन*** ➢ जिन किसान भाईयों ने कम्पोस्ट बनाने हेतु गढ्ढा (पिट) अथवा नाडेप संरचना बना रखी है वर्षा से पूर्व भरना सुनिष्चित करें। ➢ वर्षा के दौरान होने वाले मृदा क्षरण एवं मृदा कटाव को रोकने हेतु वर्षा से पूर्व अपने – अपने खेतो का मेड बंधान सुनिष्चित करें। ➢ जिन किसान भाईयों ने गोबर की खाद को अभी तक खेतों में नही पहुचाया है वो किसान भाई अतिप्रीघ्र यह कार्य पूर्ण करलें। ➢ विगत में मिट्टी परीक्षण हेतु भेजे गये मृदा नमूना परीक्षण की रिपोर्ट एकत्र कर नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से चर्चा कर खरीफ फसलो हेतु फसलानुसार उर्वरको की व्यवस्था करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवशयकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ गर्मी में मुर्गीपालन करने वालों के लिए आवश्यक है कि तापमान की तेजी से मुर्गियों को बचाया जाए, क्योंकि गर्मी अधिक बढ़ने से मुर्गियों की मृत्युदर बढ़ सकती है। ➢ गर्मी से होने वाले स्ट्रेस को कम करने के लिए चूजों के फार्म पर पहुँचते ही एलेक्ट्रल पाउडर व ग्लूकोस वाला पानी पिलायें, चूजों को 5–6 घंटे तक यही पानी पीने को दें। ➢ पानी के बर्तन उचित संख्या में लगायें–100 चूजों के लिए 3–4 बर्तन। ➢ मुर्गी के शेड को हवादार बनायें रखें. पर्दों को दिन–रात दोनों समय खुला रखें। ➢ मुर्गियों को 1– 1.5 किलो होते ही बिक्री शुरू कर दें। ➢ इसके अलावा, मुर्गियों को दिए जाने वाले दाने को गीला कर सकते हैं। गीला दाना ठंडा होगा जिसका मुर्गियां ज्यादा सेवन करेगी। परंतु ध्यान रखें कि गीला किया दाना शाम तक खत्म हो जाए वर्ना उसमें बदबू आ सकती है।दाने की बोरी को कभी भी गीला न करें। ➢ फार्म में बहुत ज्यादा मुर्गियां नहीं पालें हो सके तो शेड के क्षमता से 20 प्रतिशत कम मुर्गियां रखें। ➢ मुर्गियों की छत का गर्मी से बचाने के लिए छतपर घास व पुआल आदि को डाल सकते हैं. या छत पर सफेदी करवा सकते हैं. सफेद रंग की सफेदी से छत ठंडी रहती है। ➢ चूजों को रखने से पहले शेड को अच्छे से साफ करें और शेड के अंदर–बाहर चूना का छिड़काव करें।

		➢ मुर्गियों में अधिक मृत्युदर होने से मुर्गीपालकों को भारी वित्तीय हानि उठानी पड़ सकती है। गर्मी के मौसम में थोड़ी सावधानी से मुर्गियों को तेज गर्मी के प्रकोप से बचाया जा सकता है और अधिक से अधिक लाभ कमाया जा सकता है।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ भिण्डी/लोबिया/कद्दू वर्गीय सब्जियों आदि में पीत शिरा मोजैक/पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्ल्यू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी मे घोलकर 15 दिन के अंतराल पर आवश्यकता अनुसार छिड़काव करें। ➢ कद्दू वर्गीय सब्जियों में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु क्षतिग्रस्त फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। क्यू ल्योर + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने घोल में 5 X 5 X 1.5 मिमी0 के प्लाई वुड के टुकड़ों को एक सप्ताह तक शोधित कर कर ट्रैप लगाना चाहिये। ➢ टमाटर में फल छेदक एवं बैंगन में कलंगी एवं फल बेधक कीट से बचाव हेतु ग्रसित फलों तथा प्रभावित कलंगी को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। ➢ दीमक के जैविक नियंत्रण हेतु ब्यूवेरिया वैसियाना 1.15 प्रतिशत बायोपेस्टीसाइड की 2.5 किग्रा0 मात्रा को 60–70 किग्रा0 गोबर की खाद में मिलाकर प्रति हे0 की दर से भूमि शोधन करना चाहिये। ➢ आम में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु मिथाइल यूजीनाल + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने मे घोल में 5 X 5 X 1.5 मिमी0 के प्लाई वुड के टुकड़ों को शोधित कर ट्रैप लगाना चाहिये। 12–15 ट्रैप प्रति हे0 की दर से प्रयोग करें।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ not received
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	जून माह में अधिक गर्मी एवं शुष्क होने के कारण काफी सावधानियां अपनानी चाहिए। इस माह में फलों का अधिक गिरना, छालजलन, पत्तियों का झुलसा तथा सिंचाई की भी अधिक आवश्यकता होती है। यहां तक कि छोटे पौधों का झुलसा भी अक्सर देखा गया है। इस कारणवष बाग मालिकों को पौधों में सुचारू नमी बनाने की आवश्यकता है। भूमि की नमी को बनाये रखने के लिए भी आवश्यक कदम उठाने की जरूरत है। खरपतवार को भी निराई – गुड़ाई द्वारा या खरपतवारनाशी दवाओं द्वारा नियंत्रण में रखना चाहिये। नये बाग लगाने की योजना तथा रेखांकन कार्य भी

इसी माह में करने की आवश्यकता है ऐसी परिस्थितियों में बताये जा रहे सुझावों के अनुरूप ही कार्य करें।नये बाग के रोपण हेतु प्रति गड्ढा 30–40 किग्रा सड़ी गोबर की खाद, एक किग्रा नीम की खली तथा आधी गड्ढे से निकली मिट्टी मिलाकर भरें। गड्ढे को जमीन से 15–20 सेमी. ऊँचाई तक भरना चाहिए।

केला की रोपाई के लिए उपयुक्त समय है। रोपण हेतु तीन माह पुरानी, तलवारनुमा, स्वस्थ व रोगमुक्त पुत्ती का ही प्रयोग करें। पुत्तीयों के ऊपरी तानें की कंद से 25 से 30 सेंटीमीटर पर काट दें। रोपाई से पूर्व सभी पुत्तीयों को 1 ग्राम बविस्टीन प्रति लीटर पानी के घोल में उपचारित कर ले। रोपाई के समय केवल कंद भाग को ही मिट्टी में दबाए तथा रोपाई के बाद सिंचाई कर दें। पपीते में सितंबर–अक्टूबर में लगाए गए पौधों में अतिरिक्त नर पौधों को निकाल दे। पुराने बागों में इंटरक्रॉपिंग के रूप में हल्दी व अदरक बोआई करें। बेर में कटाई–छटाई का कार्य कर ले। आम में ग्राफ्टिंग का कार्य करें।

तेज गर्मी से बचाव :–

तेज गर्मी से बचने के लिए पौधों के मुख्य तने पर चूने तथा नीले थोथे का लेप करें। घोल बनाने के लिए कापर सल्फेट 2.5 किलोग्राम, बुझा हुआ चूना 5 किलोग्राम, सरेश 1/2 किलोग्राम तथा पानी 30 लीटर प्रयोग करें। यदि बाग में जंतर या ढैंचा है तो पानी देकर इसकी बढ़वार बढ़ा दें।

सिंचाई व्यवस्था :–

अत्यधिक गर्मी के कारण पानी की मात्रा को पौधो में बनाए रखने के लिये सिंचाई पंद्रह दिन के अन्तराल पर अवश्य दें। यदि बूंद–बंदू सिंचाई द्वारा बाग चलाया जा रहा है तो उसकी उम्र के हिसाब में निम्नलिखित मात्रा में पानी दे। ऐसा करने से फलों का गिरना भी रूक जाएगा। बाग में पानी हमेशा शाम होने के बाद लगायें तथा गलत दिशा में बह रहे पानी से होने वाले नुकसान का पूरा ध्यान रखें। पानी की उपलब्धता के अनुरूप ही बाग का विस्तार किया जाना चाहिये।

मलचिंग द्वारा भूमि जल संरक्षण :–

भूमि को पॉलीथिन शीट द्वारा, पराली द्वारा, चने के नीरे द्वारा या भुई द्वारा ढकने से भूमि जल को वाष्पीकृत होने से बचाया जा सकता है। परन्तु ध्यान रहे कि पराली वगैरह से ढकने पर सूख होने के कारण इसमें आग लगने या दीमक के आने की संभावना रहती है। अतः इससे बचने के लिए सावधानी बरतें।

बाग में हल जोतना :–

जून माह में बाग की भूमि को जोतना अतिआवश्यक है ताकि खरपतवारों का पूरी तरह से नष्ट किया जा सके तथा भूमि की ऊपरी परत ढीली करने पर यह मल्च का काम करें। ऐसा करने पर कीट व्याधि पर भी नियंत्रण पाया जा सकता है।

नींबू प्रजाति के बागो में खरपतवार नियंत्रण के लिए खरपतवारनाशी दवाओं का प्रयोग भी किया जा सकता है।

नर्सरी (पौधशाला) के कार्य :–

- सिंगल स्टेम ट्रेनिंग :– नींबू प्रजाति में खट्टी को सधाई देने के लिए सभी फुटान को हटा दें। (षीर्ष फुटान को छोड़कर) ताकि बरसात के मौसम में इस पर बडिंग या ग्राफिटिंग की जा सकें।
- बारामासी नींबू की 2.5 सेमी हार्डवुड टहनियों को पांच से आठ इन्च लम्बी काटकर इस माह के अंत में लगा दें।
- फालसे का बीज भी इस माह के दूसरे पखवाड़े में क्यारियों में बीज दें।

		➢ पौधशाला में हर दूसरी सिंचाई के उपरान्त निराई–गुड़ाई अवश्य करें। ➢ आम और अमरूद के पौधों में बरसात में इनार्चिंग कराने के लिए बीजू पोधों को गमले में लगा देवें ताकि एक से डेढ महीने बाद इन पौधों पर पैबन्दी (प्रवर्धन) किया जा सके। फल पौधों पर 0.6 प्रतिषत बोरक्स का छिड़काव करें। ➢ बेर में 15 जून तक पौधों की वार्षिक काँट–छाँट करावें। गमले की सफाई कराकर गोबर की खाद एवं उर्वरक देकर सिंचाई करें प्रति पेड़ लगभग 60–80 किलोग्राम गोबर की सड़ी खाद डाले। सुपर 100 ग्राम से 500 ग्राम (पौधे की आयु) के हिसाब से दे। ➢ नीम्बूवर्गीय फलः फलदार पदों में नाईट्रोजन व पोटाश की दूसरी मात्र का प्रयोग करें.। ➢ अंगूर की फसल में पक्के हुए गुच्छों को तुड़ाई कराकर प्रत्येक गुच्छे में से सडे फल तथा कच्चे फल की काँट छांट–कर बाजार में बेचें। नई बेल में 80–90 ग्राम यूरिया प्रति बेल हर दूसरी सिंचाई पर देते रहे व फालतू बढ़वार रोकते रहे। ➢ अमरूद के नये पौधें को गर्मी व लू से बचाये और सिंचाई अवष्य करें। ➢ आडू के नये पौधे के तने के साथ मिट्टी अवष्य चढ़ायें। ➢ बागो में सिंचाई नियमित रूप से करते रहे। छोटे पौधों को गर्मी व लू से बचायें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	**वानिकी पौधशाला में सिंचाई प्रबंधन** ➢ पौधशाला में पौधों को सुबह जल्दी (सुबह 9 बजे से पहले) या शाम के समय (शाम 4 बजे के बाद) सिंचाई करें ताकि वाष्पीकरण से होने वाली नमी की हानि कम हो सके। ➢ दोपहर के तेज धूप के समय ऊपर से सिंचाई (ओवरहेड इरिगेशन) से बचें, इससे पत्तियाँ झुलस सकती हैं और फफूंद रोग लग सकते हैं। ➢ नर्सरी बेड के चारों ओर मल्चिंग (सूखे पत्त / घास–पुआल) का उपयोग करें ताकि मिट्टी की नमी बनी रहे और जड़ क्षेत्र का तापमान नियंत्रित रहे। ➢ अत्यधिक गर्मी के दौरान नए रोपे गए या अंकुरित पौधों के लिए अस्थायी शेड नेट (50.75ः छाया) लगाएं। **नर्सरी तैयारी हेतु फल संग्रह (कृषि–वानिकी प्रजातियाँ)** ➢ वन क्षेत्रों से पके फलों को संग्रह करने का यह सही समय है, जिनसे नर्सरी तैयार की जा सकती है। ➢ चिरौंजी (बुकानानिया लांजान) ➢ तेंदू (डायोस्पाइरस मेलानोक्सिलॉन) ➢ सहली (गोंद)दृएनोजीसस लैटिफोलियाध्स्टरकुलिया यूरेन्स (गोंद उत्पादक प्रजातियाँ) ➢ केवल पूरी तरह से पके, स्वस्थ एवं रोग–रहित फलों का ही संग्रह करें। ➢ संग्रह के बाद बीज निकालें, साफ करें और ठंडी, सूखी एवं हवादार जगह पर स्टोर करें।

		➢ बुवाई से पहले बीजों को फफूंदनाशक (जैसे कार्बेन्डाजिम / 2 ग्राम प्रति लीटर पानी) से उपचारित करें, ताकि अंकुरण से पहले और बाद में सड़न से बचाव हो सके। **तेज हवा से हुए पेड़ों / तनों के नुकसान का प्रबंधन** ➢ हाल की तेज हवाओं से पेड़ों हुई क्षतिरू ➢ टूटी / मुड़ी हुई शाखाओं को तेज आरी या सेकेटर से सावधानीपूर्वक हटाएँ व मुख्य तने के पास साफ, ढलानदार कट लगाएँ, ध्यान रखें कि छाल के कॉलर को नुकसान न पहुँचे। ➢ शाखा टूटने से बड़े घाव होने पररू घाव की सतह को फफूंदनाशक घोल (जैसे कॉपर ऑक्सीक्लोराइड / 3 ग्राम प्रति लीटर पानी) से साफ करें। ➢ घाव पर ब्लीटॉक्स (कॉपर ऑक्सीक्लोराइड) पेस्ट लगाएँ दृ इसके लिए ब्लीटॉक्स 50 ॅच. पानी. थोड़ी सा टैल्कम पाउडर मिलाकर चिकना पेस्ट बनाएँ। ➢ नर्सरी एवं रोपण स्थल से गिरे हुए मलबे (टूटी शाखाएँ, पत्तियाँ) को हटा दें, इससे आग का खतरा तथा कीटों का आश्रय कम होगा। **गर्म एवं शुष्क मौसम के लिए सामान्य निवारक उपाय** ➢ तीव्र गर्मी के दौरान किसी भी प्रकार की रोपाई या छंटाई (प्रूनिंग) से बचें। ➢ अत्यधिक संवेदनशील प्रजातियों (जैसे चिरौंजी के पौधे) के लिए दिन में दो बार हल्की सिंचाई करें। ➢ वन नर्सरी के चारों ओर अग्नि रेखा (फायर लाइन) बनाए रखें, ताकि आसपास की सूखी घास / वन तल से आग लगने की दुर्घटना से बचा जा सके।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय डॉ मयंक दुबे	6. डॉ दिनेश गुप्ता 7. डॉ पंकज कुमार ओझा 8. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 9. डॉ जगन्नाथ पाठक 10. डॉ धर्मेन्द्र कुमार